

अथवा वृणोतेत्यादि

॥ कौंरु कर्मात्तराडे ॥ ॥ गुरुनमस्कार ॥ ॐ वज्रोदके कूं फूट् ॥ इति जलमविस्थाप्य ॐ कौं
॥ पादप्रक्षाल्ये ॥ ॐ कौं विश्वधर्मगायत्री सर्वपापानिसमयाशेषविकल्यानय ॥
॥ फूट् स्वाहा ॥ इति जलेन द्विशतम् ॥ ॐ नमो धरिवज्रिणी सर्ववशं करि कूं फूट् स्वाहा ॥
इति क्षिरावन्धनं ॥ ॥ ॐ सर्वतथागताभिषेकसमयाप्रिये कूं ॥ इति जलानिषेक ॥ ॐ न
मो धरिवज्रिणी रक्ष मां कूं फूट् स्वाहा ॥ इति वस्त्रांतिकेरक्षा वद्विष्यात् ॥ ॥ द्वारपूजा ॥
गंगासायनये ॥ ववदुकाय ॥ क्षं क्षवपालाय ॥ ग्यागिनी न्यो ॥ पूर्वादिक्रमेन ॥ ॐ

कुलुक्या तनु शोधनं

शक्य भुवि जित भुवि काय भुविः ॥ श्रीरघुनाथो नमः ॥ यन्मन्त्रप्रधानं

ओं कूफदूखा ॥ इति व्यापकतया ॥ वाक्चित्तशरिरशोधन ॥ ॐ वज्रप्रवृद्धं ॥ प्रवृद्धं ॥ ॐ वज्र
गंधं ॐ हृदि ॥ ओं नृषे ॥ हूं शिरशि ॥ ततः कूककाधानं ॥ कूककाकरये कूक्यामसक
स्थानिरत्तरं ॥ नीलवर्णात्रया घर्णा रूपारूपवति परां ॥ ज्वलन्त्यावकसंकासां विगलतपत्ता
सातृकां ॥ कूककात्रिधाशिरसि पूजयेत् ॥ जय १० ॥ योनिमुद्रां दर्शयेत् ॥ ॐ सर्वविघ्ना
न्सारये कूफदूखा हा ॥ इति विघ्नानुत्सारयेत् ॥ अर्घ्यक्षितसिद्धार्थे न नाराचमुद्रया क्षिपे
ॐ अथ वित्रवज्रभूमे रक्ष २ हूं कूफदूखा हा ॥ इति मंत्रे ॥ भूमिशोधनं ॥ तदुपरिकोमला ॥ २ ॥

रेखे २

॥ अश विष्टर मा। स्त्री र्थं तदंभावे रक्तकंवल मा। स्त्री र्थं तदभावे कृष्णसार व्याघ्रचर्म वा
ॐ आँ सुरखे वजरेखे कूंफ दूखाहा ॥ रक्तचन्दन पुष्पादि पूजयेत् ॥ स्वस्तिकासन पद्मा
नंवा चोपविश्य ॥ ॐ नमः पुष्पकेतुराजा हने यसंम्यक संवृद्धाय ॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महा
पुष्पे सुपुष्प पुष्प संभवे ॥ पुष्पे च यावकीर्ण कूंफ दूखाहा ॥ इति पुष्पशोधनं ॥ ॐ शतानिषेक स
म्यप्रियसमासये कूंफ दूखाहा ॥ इति पुष्पादिमंत्रमयं ध्यात्वा ॥ कूं आँ ॐ ॥ ॥ त्रिकायशोध
नं ॥ ततः सुवर्णादिपीठचके श्रीखराड रक्तचन्दन कर्पूर कलुरी गोलोचन कूंक्रम वज्रपु

ष्यादिद्रव्यविधिलिख्यते ॥ अं आः सुरेखेव जरेखे हूं फ हू स्वाहा ॥ इति मंत्रेणा. विकोरा. अष्ट
दले चतुरश्रे. चतुर्दश. अष्टवज्जे. चक्रविधिलिख्ये ॥ अं आः सुरेखेव जरेखे हूं फ हू स्वाहा
इति मंत्रेणा ॥ पूर्व्वे क्रीं न्याम्ये श्रीं. उत्तरे फ. पश्चिमे हू. विकोरा मध्ये हूं लिख्यते ॥ ॥ ततः पीठपू
जा ॥ आधारशतये २ ॥ अनन्ताये २ ॥ कूर्माय २ ॥ वराहाय २ ॥ पृथिव्यै २ ॥ सगतये २ ॥ रत्नदी
पाये २ ॥ मणिमण्डपाय २ ॥ शमशानाय २ ॥ कल्पवृक्षाय २ ॥ ॥ नानामणिभ्यो २ ॥ नानालंका
भ्यो २ ॥ मुनिभ्यो २ ॥ देवेभ्यो २ ॥ वज्रुनांस्थिमोदनाशिवाभ्यो २ ॥ चतुर्दिक्षु शवसुराड ॥ ३ ॥

क्रांतिस्थिभ्यो २ ॥ ^{पुष्पे} अष्टदलेपीठशक्तिपूजा ॥ लक्ष्मि २ ॥ सरस्वत्यै २ ॥ रत्ने २ ॥ श्रीर्त्ति २
 कीर्त्तये २ ॥ शान्त्यै २ ॥ पुष्पे २ ॥ तुष्ये २ ॥ मध्ये ॥ ॥ ह्रीं प्रेतासनाय २ ॥ दलनूले अष्टयोगिनी
 पूजा ॥ महाकाल्यै २ ॥ रुद्राण्यै २ ॥ उग्रायै २ ॥ भीमायै २ ॥ घोरायै २ ॥ क्रूरायै २ ॥ महाकायै २ ॥
 भैरव्यै २ ॥ विकीर्णाय ॥ कामेश्वर्यै २ ॥ दित्यकरवासिन्यै २ ॥ चण्डनायिकायै २ ॥ ततः प्राणाया
 मक्रमेत् न भूतश्रद्धिविधाय ॥ ^{शक्तिशिष्या} ह्रीं कारं रक्तवर्णां नो मोक्षात्वा तडु हूताग्निना स्वदेहं दग्धं विधि
 त् ॥ ^{पापपुरुष} त्रीं कारं पीतवर्णां विचिन्त्यः तडु हूतवायुना तद्गन्धं प्रोत्सारयेत् ॥ ह्रीं कारं श्वेतवर्णां शिर

सिध्यात्वा तडु दूता मतेना सा वयेत् ॥ ॥ ततो ध्यानं ॥ ततो ऽ यगतया प्योच जंत्सर्वं चराचरं ॥ मग्न
व्यापक निराखो आकारां चितयेततः ॥ तच्छब्दगुणायोगेन रक्तपद्मं विचित्रयेत् ॥ तस्योपरि
गतो ध्यायेद्दंकाराद्रक्तभोजनं ॥ ततोपरिततो ध्यायेद्दंकारं नीलसंनिभं ॥ तस्योपरिगतो ध्याये
त्कर्तिकावीजभूषितां ॥ तस्योपरि महादेवी सर्वो नीलघनप्रभां ॥ लम्बोदरीं व्याघ्रचर्मव
स्त्रच्छन्ननिताम्विती ॥ पीतोन्नतपयोभोरं रक्तवशीललोचनं ॥ ललजिह्वामहाभीमां दंष्ट्रा
नेटिसमुज्ज्वलां ॥ पिंगोग्रैकजटाजूटां नीलनागसमुज्ज्वलां ॥ नीलोपलसन्नालाचर्द्धजुगं ॥ ४ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

करि ॥ श्वेतोत्थिपट्टिका युक्तकपालयश्च शोभितां ॥ ललाटे रक्तनागेन कृष्णवर्णाव
तसिनी ॥ अश्रुमं हनाग कृतहस्तं मे हो ज्वलां ॥ हृवा दल आ मनाग कृतयशो यवीतिनी
॥ चतुर्भुजारक्तमांसखराडमण्डितमस्त्रिनां ॥ जयजुटेन भ्रूवेण शोभितातिदशाधार
या ॥ खड्गेन दक्षिणोऽधो शोभितावीरनादिनी ॥ तदधस्ताद्दीजवर्णां कर्तृकालंकृता
परां ॥ वामोर्ध्वरक्तनोलेखदिकस्वरमनोहरं ॥ दधती नीलपत्रश्च तदधस्ताः कपालकं ॥
जगतां जयसंयुक्तं ॥ दधती कन्दसंनिभं ॥ धूम्राभ्येनागसंदोहकनकैपुरसुन्दरी ॥

सुवर्णावराणागेन कंकनोज्ज्वलपानिकां ॥ भववर्गमहादेव. सवहृदि मराशनीं ॥ निर्यस्व
नादियाननसक्तचन्द्रप्रयदाचला ॥ सर्वपादद्वयोद्वारवामपादांमहोसुखी ॥ क्रन्दामनाग
संशोभि. कुंदिसुत्रां विलोचनीं ॥ ईषद्वक्त्रेन नागेन. कृतनूपुरपल्लवां ॥ सप्रदिनं द्रक्तुं ^{सुव}
नृनुरोद्वेगभूषणौ ॥ अन्योन्यकेशग्रंथितैपादपद्मे प्रलम्बितौ ॥ पञ्चाशद्विर्मलामाला
शोभितां भूषणेश्वरीं ॥ अक्षो ^{क्षो}न्यनागसंबन्धजटाजुटचरप्रदां ॥ एवंभूतामहादेवीमाता
संतनयंतथा ॥ विशास्येमहादेवीपरिशुतोहं महाकवि ॥ इति ध्यान ॥ हृदयांस्तुजे मान ॥ ५ ॥

प्रचारपूजा॥ ततो मूलमंत्रेण प्राणाग्नौ मंत्रं कुर्यात् ॥ ॥ अथ अष्टादिन्यासः ॥ अ
स्य श्रीमदेकजटा मंत्रस्यः अक्षोभ्यः सविर्वहति छन्दः श्रीमदेकजटा देवताङ्गं वीजं फट्
शक्तिः क्रीं कीलकं मम इत कवित्वं पादित्य सिद्ध्यर्थं विनियोगः ॥ इति कृता अलि वधा ॥ अ
क्षोभ्यः सविरे नमः ॥ शिरसि ॥ वृहति छन्दस्यै ॥ मुखोः श्रीमदेकजटायै ॥ हृदि ॥ क्रीं वीजाय
॥ लिंगे ॥ फट् शक्त्यै ॥ आधारे ॥ क्रीं कीलकाय ॥ हृदि ॥ मम इत कवित्वं पादित्य सिद्ध्यर्थं
विनियोगः ॥ व्यापकं मातृकान्यासः ॥ ॐ अस्य श्रीमातृकान्यासस्य ब्रह्माक्षयै ॥ शिर

सि॥ गायत्री छन्दसे २॥ मुखे ॥ मातृका सरस्वती देवताय २ हृदि ॥ व्यंजनबीजेभ्यो २॥ गुह्ये ॥
स शैशशक्तिभ्यो २॥ पादयो ॥ अँ कँ खँ गँ घँ ङँ आ ह्रदयान्य २॥ इँ चँ ईँ शि. उँ टँ ५ ऊँ शिखा
॥ ऐँ तँ ५ ऐँ कव ॥ ओँ औ. नेत्र ॥ अँ यँ १० अ. अस्त्राय ॥ ^{रामधुङ्गमानुका} ॥ अथ ध्यान ॥ पञ्चासैर्भिः प्रियभि
र्विभक्तमुखैः यत्तथावक्षस्थलाः नास्वत्सोलिनिवर्द्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गसनी
मुद्रामक्षगुणसुधाधकरसंविद्यां च हस्तानुजैः ॥ विभानां विशदप्रभां त्रिनयनावाग्देव
माश्रये ॥ अन्तरमातृका ॥ अँ १६ नमः ॥ कँ ठ व ज्ञे ॥ कँ १२ नमः ॥ ह्रदयान्ये ॥ उँ १० नमः ॥ ६॥

मेघने॥ वंदनमः॥ लिंगपद्मे॥ वंदनमः॥ आधारपद्मे हंसने नमः भूमध्ये॥ ॥ अथ
वहिन्यासः॥ शिरसि अं नमः॥ मुखे ओं॥ दक्षनेत्रे ईं॥ वामनेत्रे ईं॥ दक्षकर्णे उं॥ वा
मकर्णे ऊं॥ दक्षनाश्यां मं॥ वामनाश्यां मं॥ दक्षगंडे लूं॥ वामगंडे लूं॥ ओष्ठे ऐं
॥ अधरे ऐं॥ उर्ध्वदन्तपत्तौ ओं॥ अधः॥ दन्तपत्तौ ओं॥ शिरसि अं॥ मुखे अ॥ दक्ष
भुजमूलके॥ मध्यसन्धौ खं॥ मणिवन्धे गं॥ अंगुलिमूले घं॥ अंगुल्यागे ङं॥ रेवं
वामेपि॥ चंद्रं जं रं मं॥ दक्षिणोरुमूले ङं जाग्रुनि॥ ठं गुल्फे ङं अंगुलमूले ङं अं

गुल्यागे शां ॥ ॥ येवं वामपादेपि ॥ तं थं दं धं नं ॥ दक्षपार्श्वे फं ॥ वं ॥ नाभौ भं ॥ उदरे
मं ॥ हृदि यं ॥ दक्षासं रं ॥ ककुदिलं ॥ वामांशं वं ॥ हृदादिदक्षबाहौ शं ॥ हृदि ॥
जथरे ॥ लं ॥ हृदादिमुखे ॥ क्षं ॥ इत्युत्तमिक्रिया न्यसेत् ॥ इति मातृकान्यासः ॥ ॥ पञ्च
सं ॥ सर्ववाग् पितृ ॥ असं ॥ करस्वधनं ॥ जां अपिलः वाग् पितृ ॥ अगु
शाभ्यां ॥ जां अखराः वाग् ॥ तं ॥ दं वलः वाग् ॥ मं ॥ विष्णुवाग् ॥ अनां ॥ श्रौ रुद्र
वाग् ॥ कनीं ॥ हं ॥ सर्ववाग् ॥ अस्त्रां ॥ ऐवे हृदयादि ॥ ॥ अथ षोडशान्यासः ॥ अथ विसे ॥ ॥

गस॥ अँ औं ईं उँ कुँ क्रौं च्रौं च्रँ पहदि॥ ऐं ऐं ओं औं अँ अँ कँ खँ गँ घँ॥ दक्षिणा भुजे
॥ ङँ चँ छँ जँ ङँ ञँ टँ ठँ डँ वा म भुजे॥ गौं तँ पँ दँ धँ नँ पँ फँ वँ भँ मँ दक्षित जघे॥ मैँ यँ रँ लँ वँ शँ
पैँ सँ हँ क्षँ॥ वाम जघे॥ मूलेन व्याप कँ कुं र्यात्॥ ततः सँ षं स्थापनं॥ स्ववामे त्रिकोत मण
लचतुरशी वलिष्य॥ आधारे सँ षं स्थापयेत् मूल मंत्रे॥ जलेन पूरयेत्॥ गन्धाक्षतपुष्पान
मः॥ षडंग पूजा॥ अग्निशारवायव्यपुनेत्रमध्ये अस्त्रादिदत्त॥ मूलेन त्रियां जलि॥ आवाह
न॥ ॥ धेनुमुद्रां॥ तजलेन पूजा इत्यादिसर्वक्षपेत्॥ ऐकजगत्सैविजह प्रकटदंष्ट्रायै

हि नौ
धीनृत जेदारे प्रबोदयात् ॥ आत्मसिन्धु ॥ कृष्ण पूजा ॥ आधारशक्तिकमलासनाये ॥ व्याप
कमराडलाये ॥ क्रीं श्रीं शां शां रूं रूं रूं रूं राः शुभां अक्र श्रीपं विनोचये ॥ अमृतं आवये ॥
स्वाहा ॥ पूर्ववत् ॥ क्रीं श्रीं वां वीं ॥ क्रीं श्रीं ॥ रूं रूं रूं ॥ रूं रूं रूं ॥ अमृतं ॥ अमृ
तो ज्ञेये ॥ अमृतवर्षिणी अमृतं आवये ॥ स्वाहा ॥ मूलमंत्रे ॥ रा ३ ॥ षडंग ॥ आवा
हन ॥ धीनृ योनि ॥ विशेषार्घस्थापनं ॥ क्रीं कारगर्भत्रिको रावर्चुर्वैतुरश्रं विलि
प्ता ॥ मराडले ॥ व्यापकमराडलाये ॥ फट् मंत्रिप्रक्षालयित्वा मूलेस्थापयेत् ॥ ॥ ८ ॥

ॐ श्रीं गं रीं हूं मूं धर्मप्रददशकलात्मने अग्निमराडलाय त्रिपदिकायै ॥ फट् प्रात्रं प्रक्षा
लयित्वा मंत्रे ॐ स्थापयेत् ॥ श्रीं श्रीं हां हीं हूं मूं वसुप्रदादशकलात्मने सूर्यमराडलाय
॥ पात्राय ॥ मूलमंत्रेण विलोममातृका ॐ या ॥ ॐ व ह्मा राड ख राड ० ॥ चतुः संस्का
र ॥ मूलेन निरिदशगां ॥ फट् प्रोदशगां ॥ एवं तादनं ॥ ॐ अवगुण्ठनं ॥ फट् रक्षा ॥ तालत्र
य ॥ दिग्वचन्धनं १० ॥ श्रीं श्रीं सां सीं सूं सां कामप्रदये ॐ कलात्मने सोममराडलाय पा
त्रामृताय ॥ दक्षिभुजे नाद्या ॥ ॐ ॐ हः हेः होः श्रीः खः खं स्वाहा ॥ वामभुजे द्या

अ॥ क्रीं कारेण भाजनं॥ भौं कारेण भान्नाकाक्षमदिभुजोवज्रहस्ताङ्गं कारेणाक्षोभं रुद्रमदि
 भुजं वज्रहस्तं तयोश्च सम्युतेन महारग्निद्विभूयत् पुनः षट्कोशां विलिख्य॥ सर्वभीका
 मिनी सर्वभक्षः सौधनी गुह्यवज्रिणि क्रोधेश्वरी सर्वद्रव्यापिणि शोधय २ क्रीं भकारहते
 वर्णां हाकारं गन्धशानं क्रीं कारे वीर्यहना च अमृताकारश्च सेवयेत्॥ ॐ अमृते २ स्त्रवे शय
 क्रीं॥ मूलेन दशधा जपेत्॥ मूलेन त्रिंशं अलि ३॥ खड्गं॥ योनिं नृद्रां॥ अर्घोदकेन पूजा द्रव्या
 दि सर्वप्रोक्षणां॥ ततो भूतवलि॥ ॐ समस्तपीठोपपीठनगरोपनगरद्वारोपद्वारचत्वारो ॥ ५॥

सर्वविघ्नहर्त्राभय्यादि

सीमा

पञ्चत्वरं श्मशानोपशमशानवासित्यः सर्वभूतेषु शर्मवर्तिगृह्ण २ कूं फट् स्वाहा ॥ क्षत्रवदु
क. गण. योग्नि. वलि ॥ ॐ ह्रीं क्षत्रपालाय वलिगृह्ण २ कूं फट् स्वाहा ॥ ॐ वां वदु कना
धाय वलिगृह्ण २ कूं फट् स्वाहा ॥ ॐ गौं ग० ॥ ॐ यौं यो० ॥ महाकालवलि ॥ नमो भगव
ते महाकालाय श्मशानवाशिने हांग उ मरु हस्ताय कह २ कूं फट् स्वाहा ॥ ह्रीं महाकालसाय
मिषान्वलिगृह्ण २ गृह्णाय २ समसिद्धिप्रयच्छ स्वाहा ॥ इति सामान्यपात्रेण ॥ गृह
पात्रेण ॥ शिरसि गृह्णतर्पणम् ॥ उद्ध केशानन्दनाथपादुकां पूजयामि तर्पयामि ॥ ध्याम

३ कारिजाताम्वाः कृते श्वर्यम्वाविरुपासम्वाः

केशानन्दनाथः० नीलकंठाः० रविवधजाः० इति दिव्यौघः॥ ॐ शिवत्थाः॥ मीननाथाः० महे
श्वराः॥ हरिनाथः॥ इति सिद्धौ॥ तारापात्यम्वापाः॥ नानुमत्यम्वाः॥ जयाम्वाः॥ विज्याम्वाः
॥ महोदर्यम्वाः॥ मुखानन्दाम्वाः॥ परमानन्दाम्वाः॥ भैरवम्वाः॥ इति मानौघः॥ ॐ स्वगुरु
अमुकानन्दनाथः॥ ॐ॥ आत्मपूजा॥ पश्चिमदेगुलियाये॥ गुरुनमस्कारः॥ ऐं
५ अखण्डमण्डलाकारः॥ यन्नासनायः॥ अर्घ्यपात्राः॥ ऐं कर्मासनाः॥ ऐं किति
शिवैकोहनाये क्रंः अस्त्राय फट्॥ फट् फट् वज्रपञ्चाले स्वाहा॥ नलमकुले कुलमचले ॥ १०॥
धनाश्रयाय पूजा॥ ॥ श्रवमनः॥ प्राणायामः॥ क्रं वारुणदीर्घत्यासः॥ ॥ महाशिवप्रेतास
नाय पादू०॥ ध्यानः॥ कशलवदनाघोराः॥ त्रयांजलीः॥ छावींशाक्षरिणा॥ गायत्रीन

वलि ॥ ॥ विचारमेले सोय ॥ ॥

यति सीन

क्रीं कूं फूँ स्वाहा ॥ ॥ न्यास ॥ पश्चिम न्यास ॥ ॥ जलपात्र पूजा ॥ जलपात्रासनान्यथा ॥ ऐं ५
हं २ आनन्दशक्ति भैरवानन्द वीराधिपतये ॥ जलपात्र नद्यारिकायै ॥ पा ॥ खड्ग ॥ आवा
हन धेनुमुद्रा ॥ गायत्री ॥ ऐं ५ कुञ्जिकायै विष्णवे ॥ आत्मादिसर्वद्रव्यप्रोक्षयेत् ॥ द्रव्यसं
स्वार ॥ अर्घ्यपात्र पूजा ॥ अर्घ्यपात्रासनान्यथा ॥ ऐं ५ क्रीं क्रीं कूं कूं ॥ प्रसूर २ ॥ घोर २ तर २ ॥ इत्यादि
ऐं ५ हं २ आनन्दशक्ति भैरवानन्द श्रीमहाविद्या राजेश्वरी सं २ श्री अर्घ्यपात्र नद्यारि
कायै ॥ पा ॥ खड्ग ॥ आवाहन ॥ योनिमुद्रा ॥ भूतशुद्धि ॥ ऐं ५ हं २ आत्मनेन्द्रन ॥ क्रीं

त्रि० ॥ कृसो० पा ३ ॥ मालिनी ॥ पंचवलि ॥ ममुरास ॥ ऐं ५ श्रीं क्रीं कृ० ॥ वलि ॥ नरासन ॥ ऐं ५ श्रीं
क्षत्रः वलि ॥ सिंहासना ॥ ऐं ५ श्रीं श्री ॥ वलि ॥ ऐं केचि श्रीगि ॥ प्रेतासना ॥ ऐं ५ ह्रीं श्री सिद्धि
नामुराडाये० पा ॥ वलि ॥ मृषासना ॥ ऐं ५ गां गीं गूं गें गौं ग्लौं कृलगरी श्वराय० पा ॥ वलि ॥ पंच
मुद्रा ॥ जय ॥ श्रीं क्रीं स्वाहा ॥ ओं ॥ श्रीं ॥ ह्रीं ॥ ग्लौं ॥ स्तोत्र ॥ गोमयी पुत्रं ॥ अत्रगन्धतर्प्यता ॥ नाथ
॥ सिद्धि कृला ॥ तत्त्वसोधन ॥ श्रीसंवत्ता आवाहन ॥ त्रिदेव ॥ सत्र ॥ वटु ॥ गला ॥ मुद्रा न्तं ॥
दिगपुजा कलेशपूजा ॥ आवाशक्तये ॥ ध्यान ॥ श्रद्धा स्फुटिकं ॥ अघोर ॥ वज्र ॥ ऐं ५ ॥ ११ ॥

क्रौं अघोरे ऐं ५ व जे क्र० ॥ ॥ मूलमंत्र ॥ ऐं ५ हं ८ क्रल व अ महा से न सं मोहन सकल ती
र्थ मंत्र देवता कलातत्त्व तत्वाधियतये वल्लविष्णु रुद्रात्मने विद्या शिव तत्त्वौ हं ८ सं ८ श्री स
म्पूर्ण कलश मूर्तये पा० ॥ वल्लभो २ ॥ विष्णवे २ ॥ रुद्राय २ ॥ सदा शिवाय २ ॥ ॐ नमः
अमृतीशाय मृत्युञ्जयाय २ ॥ क्षाण्णसप्त सप्तुडेभ्यो २ ॥ इन्द्रादि १० ॥ आदित्यादि ८
॥ अभिन्यादि २८ ॥ विष्णुं मादि २७ ॥ पुतिपदा १५ ॥ मेघादि १२ ॥ मूजर्तेभ्यो २ ॥ करणो
भ्यो २ ॥ गंगादि अष्टशरिरेभ्यो २ ॥ अश्वस्थामादि अष्टचिरं जीविभ्यो २ ॥ वशिष्ठादि स

पञ्चविभ्योऽ॥ अनन्तादिअष्टनागे०॥ शान्तितीतकलायैऽ॥ शान्ति कलायैऽ॥ विप्राकला
यैऽ॥ निवृत्तिकलायैऽ॥ प्रतिष्ठाकलायैऽ॥ मूलेनत्रिधा अलि॥ षडंग॥ अधोरेनवलि॥
कृत्स्नं सिद्धिः श्रियैऽ॥ लक्ष्मीऽ॥ आवाहन धेनुमुद्रा॥ जप॥ अं शुभः॥ सप्तत्रोरत्ना षष्ठी॥
अत्रगन्ध॥ ॥ क्रमपूजा॥ आधारशक्तिः॥ ध्यानं॥ लाक्षणरत्ननिभादेवी पद्मरागस
मप्रभा॥ सर्वरत्नविचित्रांगी त्रौविकाभूतविग्रहा॥ अष्टादशभुजादेव्या नानाप्रहरगोत्र
ता॥ नानारशधरीदेवी त्रैलोक्यानान्यविप्रते॥ खड्गपाशां कुशां सव्ये कर्णाले कुशध्वजं॥ ॥ १२॥

रथाङ्गश्च तथा च राङ्गं न व म त्त व र प्र द ा ॥ ये त के ध नु पा श श्च ॥ ख द्वां ऊ स क म रा ऽ लु ॥ ४ ॥
लं मु द्ग र वै न श्च ग न्ध त्रा र्णं चो तै रे क रे ॥ म न्द शं वे षु यि त्वा तुः न दि भू ता वि स र्पि ता गु स
त्रि पा त का न् स र्वा न् मृ ता मृ त को दू वा ॥ ५ ॥ हं ट आ न न्द स क्ति भै र वा न न्द वी रा षि ष त ये
सं ट कु ल कु म्भ अ लि मूर्त य पा ॥ ६ ॥ प सं ट आ न रा ऽ श क्ति भै र वा न न्द श्री मा ह वि श्वा
रा जेश्च रि ॥ हं ट कु ल कु म्भ अ लि मूर्त य पा ॥ ७ ॥ अं व ह्म नि अ सि ता ऊ भै र वा य ॥ पा
कै मा हे ० रु रु ॥ पा ॥ चै को मा रि च रा ऽ ॥ त वै ० कौ ध ॥ तं वा ता उ त्म ॥ पं ई ० क पा लि ०

यैचासु. भीषण०॥ शं महाल. सहार०॥ अघोरसु०॥ षडंग॥ अघोरेगाबलि॥ आवा
हन॥ योनिमुद्रा॥ जप॥ ह्रीं स्त्री १॥ स्तोत्र॥ वनीतागति॥ अत्रगन्धादि॥ तर्प्यगा॥ पा
त्रपूजा॥ आधारशक्ति॥ ऐं व लै हिमराडलायनम॥ हं सूर्यमराड०॥ सै सोमम
राड॥॥ अघोरास्त्रेगा॥ ग्लूं स्लूं प्लूं म्लूं न्लूं पा०॥ ऐं हं २ आनन्दशक्ति भैरवानन्दवीराधिप
तये सै २ महापात्रभटारिकाये. पा०॥ ऐं ५ सै २ आनन्दशक्ति भैरवानन्द श्रीविद्याराजे
श्री. हं २ श्रीमहापात्रभटारिकाय. पा॥ ३॥ बलान्यादि॥ अशिताङ्गादि॥ षडंग॥ ॥१३॥

अघोरेण वलि ॥ आवाहन ॥ धेनु योनिनुद्रां ॥ जय ॥ स्त्री स्त्री १० ॥ स्तोत्र ॥ का अविआलि
पूर्णां च अमृतं दिव्यरूपिणां ॥ सिद्धि सिद्धि करी देवी पात्र पूजा ॥ वने प्रदं ॥ अत्र गन्ध ॥ तपसा
॥ विश्वद्विपूजा ॥ यन्त्रासना ॥ पा ॥ आवाहन ॥ धेनुनुद्रा ॥ ॥ नवात्मा पूजा ॥ यन्त्रासना ॥ श
वा ॥ ॥ गुरुयन्त्रिपूजा ॥ मोहनीफये ॥ ॥ ओषधी पूजा ॥ ॥ श्री कण्ठ पूजा ॥ ॥ वल्लारणादि पूजा
॥ चामुण्डा पूजा ॥ ॥ सिंहसासना ॥ पा ॥ ऐं ५ ह्रस्वे ॥ श्री सिद्धि चामुण्डा ये वलि गृह्णतु स्वाहा ॥
वागेश्वरी पूजा ॥ यन्त्रासनाय ॥ पा ॥ ऐं ५ लिंगेति ० ॥ कर्म ॥ आधारशक्ति ॥ पंचप्रेतास

पूजा ॥ अत्र गन्ध ॥ तपसा ॥ विश्वद्विपूजा ॥ यन्त्रासना ॥ पा ॥ आवाहन ॥ धेनुनुद्रा ॥ ॥ नवात्मा पूजा ॥ यन्त्रासना ॥ श

अविआलि

स्यधार

न०॥ ॥ सवा ॥ ॥ वज्रवतिसि ॥ ॥ वलिघातन ॥ ॥ त्रियांजलि ॥ पद्मासनायपाद
कां ॥ ॥ ऐं ५ हं ६ श्रीरुद्रवरण्ड ॥ ॥ आधारशक्त्यादि ८ ॥ ॥ ऐं चन्द्रमण्डलाधिप
तयेः ॥ वंलप्रेतासनायपादकां ॥ ॥ श्रीं सूर्यमण्ड ॥ ॥ विष्णुमण्ड ॥ ॥ श्रीवंक्रीम
ण्ड ॥ ॥ रुद्रमण्ड ॥ ॥ ह्रीं चन्द्रमण्ड ॥ ईश्व ॥ ॥ ह्रीं शक्तिमण्ड ॥ ॥ शदाशि
व ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॥ वष भेति ० ॥ ॥ अघोरे ॥ ॥ वज्र ॥ ॥ श्रीजयादेवीपादुकां ॥ ॥
विजयादेवीपादुकां ॥ ॥ अजिता ॥ ॥ अयराजिता ॥ ॥ जन्मनी ॥ ॥ संभनी ॥ ॥ १४ ॥

२

मोहनी॥ ॥ आकर्षणी॥ ॥ अतितांगादि ८॥ ॥

जलि॥ ॥ ऐं ५ हं २ आनन्दशक्तिवैरवानन्दवीराधिपतयः स्त्रिया

आनन्दशक्तिवैरवानन्दश्रीमहाविष्णोराजेश्वरी हं २ श्रीपञ्चिनः

रिकायाडुकां॥ ३ ॥ नलि॥ ॥ वतिशी॥ ॥ खड्ग॥ ॥ आवाहन॥

॥ तय्यरी॥ ॥ शिष्यायुजा॥ वलि॥ आवाहन॥ ॥ धैरुन॥

पूजमूलेनप्राणाम॥ अथ नम्यादिन्यास॥ अस्य श्री

विदुहतिष्ठन् श्रीमेकजटादेवताह्वीर्जं फट्श

न्दित्यसिद्ध्यर्थे विनियोगः ॥ इति कृत्वा अलिवध
 सि ॥ ब्रह्म तीक्ष्णसे मुखे ॥ श्रीमदेकजटाये हृदि ॥
 आधारे ॥ क्रीं कीलकाये हृदि ॥ मम कृत कवित्वपां दित्यसिद्ध्य
 कं ॥ ॥ खड्गन्यास ॥ ॥ कैंः सर्ववाग्पिशोः अस्त्राय फल ॥ ॥
 क्रीं अषिलवाग्पिशोः अंगुष्ठाभ्यां २ ॥ ॥ क्रीं अखराडवाग्पिशोः
 वाग्पिशोः ॥ ॥ कैं विष्णुवाग्पिशोः ॥ ॥ क्रीं रुद्र

करकलित उर्ध्व क्षतः वर्ज्युष्यादि मिलितदिन
तृका ध्यात्वा हृदया न्मूल मंत्रेणा तजामयी श्रुतेः
क्रमेण शिरसि स्थित सहस्रदल कर्णिका नमस्कृत्य
मतिव्यवहारेणान्नदन्तुता मुधौ विभ्राम्युत न
न्नासा पृष्ठादा नीय कल्पित मूर्तौ समाधायेत् ॥
पाप्मो वज्रगत्सर्वं चराचरं ॥ मग्नं व्यापनी राधो आकाराश्चिन्तयेत्ततः ॥ तच्छब्द

सुमांजलौ ना
षट्पञ्चमे द
प्रापयित्वा क्रिया स
तासां नन्दन्यां प्रस
॥ ततो ध्यानं ॥ ततो ऽपगत
तच्छब्द

गुरायोगेन रक्तयमविचित्रयेत् ॥ तस्योपरिगतो ध्यायेद्दांकारादक्रमोजन ॥ ततोपरिग
 तो ध्यायेद्दुकारं नीलसन्निभं ॥ तस्योपरिगतो ध्यायेत्कर्त्तिकां वीजभूषितां ॥ तस्योपरिमहा
 देवी ॐ ॥ चोदव ॥ ॥ ॥ ध्यानं २ ॥ इति ध्यानं ॥ ॥ ॥ स्वच्छं शरं प्रस्तः ॥ ॥ देवेशि भक्ति
 सुरभेपरिवारसमन्विते ॥ यच्च त्वय्युजयिष्या ॥ ॥ रोभवः ॥ ॥ ॥ आस
 नपुष्पमेकंदत्वा ॥ ॥ ॥ श्रीमदेजने ईहागच्छ २ ॥ इत्य
 मुखं ॥ ईहसंनिधेहि २ ॥ ॥ इत्यगुष्टमुष्टिभ्यां ॥ ई ॥ ॥ सैवागुष्टे ग ॥ १५ ॥

भिनीमुष्टिभ्यां ॥ चतुःसंस्कार ॥ मूलेन निरिदराणां ॥ अखेन प्रोक्ष
कवचेनाधवगुणानां ॥ ध्येन मुद्राया अमृतिकृत्य ॥ प्राणाप्रतिष्ठा
लंबे शं षं संहं दं सौहं हं संः श्रीमदेकजययाः ॥ प्राणा ईह श्रीम
हस्थितः ॥ श्रीमदेकजययाः सात्वतमनोबुद्धि अहंकारसर्वे
नश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वा घ्राणा प्राणा पाशा ईहै वागप्यसुखं
लेन श्रीमदेकजटे चैतन्याय २ ॥ देव्या देहे षडंगन्यास कुर्यात् ॥ मू

२॥ मूलेरा श्रीमदेकजगये वज्रपुष्पप्रतिष्ठा कूंफदूखाहा ॥ मूलेन
 नातर्प्ययेत् १०८॥ वा ५४॥ वा २७॥ ॥ या आदि ॥ मूलश्रीमदेकजगये
 माने अर्घ्य २॥ ॥ या आदि मूलनामाने आचमय स्वाहा ॥
 स्वधा ॥ मूलनामाने स्नानं २॥ मूलनामाने पुनराचमनीय
 मू० वस्त्र ॥ सिन्धूर ॥ अक्षत ॥ पुष्प ॥ धूप ॥ दीप ॥ नेवेद्य ॥
 आवाहन ॥ योनिमुद्रा ॥ आस्ता आर्पयित्वा यवार मर्चेयेत् ॥ ॥

मयुरा २॥ गरुडा २॥ महिषा २॥ गजा २॥ घेता २॥ सिंहा २॥ ऐं ५ अं ब्रा
ऐं ५ कं माहे ०॥ ऐं ५ चं कौ सारी ॥ ऐं ५ टं वैष्णवी ०॥ ऐं ५ तं वाराही ०॥ ऐं ५ यं
यं चामुण्डा ०॥ ऐं ५ शं महालक्ष्मी ०॥ वलि ॥ जयादिवलि ८॥ इन्द्रादि १० व
॥ पश्चिम ० उत्तर ० तारात्रिपुरा ० ध्वनेत्रियांजलि ॥ वलि ॥ क्षेत्र ० वटुक ० गणा
॥ कुमारीयात्रियाञ्जलि ॥ वलि ॥ षडंग ॥ आवाहन ॥ शिषा ॥ योनिमुद्रां ॥ तय
डाकायात्र ॥ ॥ ऐं ५ अजरश्चाय कृष्णश्च इन्द्राश्चारस्तथैव च ॥ इन्द्र

ॐ षां दोरि सुसूदन ॥ ॐ मुकुलं नकारश्च लं ला पा दै क द ष कः ॥ ऐ रा
 शस्तथा परः ॥ ॐ न्त को अर्थ वा कुश्च कं म लश्च ख रान नः ॥ गो नु र व श्चै व
 श्च ण ड धार कः ॥ छ ट टो पो ज ट ला ख्यो र्जं कारो नै भ रे श्वरः ॥ तं क पा शि स
 न्यश्च ज म रः ॥ र ट क र्णा रा ती का न्त न दी प्रा स्थ वि र स्त था ॥ द नु रो ध न
 प्र च ण वान् ॥ फे त्कारो वि र सिं ह श्च न्द्र ण क्षा ने च भा सुरः शु गान्ता रो
 वत्स ल स्त था ॥ श्र क नु र ण ड ष डाल स्य सु ना शो ह्नु क स था ॥ अ यान्त क सु र

उदाहृताः॥ पञ्चाशद्वर्गमुच्चार्य स्थानस्था क्षपालका॥ शेषावर्गविहितास्तु
॥ ऐकलिंगे चक्रंकारं श्मशाने च भव्यावहा॥ महालक्ष्मीवर्गोद्योरेज्वाला
॥ ऐकवृक्षे वटेनाथविद्यालो वदनो वसेत्॥ घण्टारावोगुहावासे यन्नखराड
संगमे भूरि धारोद्य पर्वटे सरुतस्तथा॥ निर्मले सवनि प्राहो निधाने मनि भद्र
वधनाध्यक्षे शिवारेषु कोष्ठकः॥ अरुण्ये शवरं विन्या डन्याने मधुरं स्त
र्महावीर्यापालयित्वा स्थिता जगत्॥ तत्र अवसदा कालं वलि पूजानि

शत्रुभ्रपालदि जाआगृकृतेवलिं॥ भूर्ध्वे गतरयसी च स्वाचारिवलिकांश्चि
 चत्वार कव्यादा इतरे जरे॥ वर्वरपिंगकेशाश्चपिंगभूलोचन॥ दंष्ट्राकरा
 लाभरणो ज्वला॥ काश्मीरचन्द्र श्रीखरोडे मृगाली मीनफक्षवे॥ पुष्पेर्वसु
 पैसुगुगुलै॥ भावितात्मनि रात्रौश्चक्रम जाय परायणो॥ घण्टावाद्यैश्चगीता-
 सदासदा॥ ऐं ५ ॐ श्रीं ह्रीं अनुकायः अवतर २ क्षत्रपाल कपिलजटाभार
 च ज्वाला मुखगन्धपुष्पवलिं पूजां गृह्ण २ भैरवरूपेण नुरु २ नुरु २

मुद्रा ॥ ॥ विप्रयुजा ॥ प्राणायामः न्यासः ॥ सौं अस्त्राय फ ६ ४ ॥ करस्य
भ्यां २ ॥ लीं तः इति न्यासः ॥ ॥ आसनं ॥ पद्मासनाय २ ॥ पञ्चप्रेतासन
वालार्कमण्डलेत्यादि ॥ मूलेन त्रियाञ्जली ३ ॥ तर्पण ३ ॥ मूलेन पाद्मादि च
अलि ३ ॥ तर्पण ३ ॥ चक्रदकोत्कें त्रियांजलि ॥ वडंग ॥ आवाहन ॥ वलि ॥
लिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ह्रीं योगिनीभ्यो ॥ वलि ॥ आक्षत्रपालाय ॥ वलि ॥ गांगराध
सर्वविघ्नकृते सर्वभूतेभ्यः वलि ॥ आवाहनः योनिमुद्रा ॥ मूलेन त्रियांजलि

षडंग ॥ आवाहन-योनिमुद्रा ॥ ॥ कुमारिपूजा ॥ आधारशक्त्या
पा ॥ ध्यान ॥ कोमारीपरमादेवीनीललोहिततेजसा ॥ जटायुतधरादेवी-अं
विशालवदनादेव्या-पूर्णाचन्द्रनिभानना ॥ सौम्यश्चक्रगडलंदेव्यादक्षिणो
क्षीणांगितावगीसमुन्नतपद्मधरा ॥ दक्षिणोचगडादेव्या-वारमादायसे
ताजंघा-दक्षिणोचोन्नताप्रिये ॥ मयूरवाहनादेवीसर्वशाशंकरीपरा ॥ ॥ ध
॥ ऐं ५ चं ६ ५ कां कीं कुं कूं ॥ कों श्रीं कोमारीकाविश्वे-पा ॥ वलि ॥ हं सा स ना र

वाकुलनन्दरी॥ नानावर्णमुखं देव्यासूय्यो हवामिकं स्मरेत्॥ वार्धचम्प
राभूषिता॥ त्रिशूलोक्तशवज्जम्बुकरासुधदक्षिणे॥ पात्रयाशखद्वारां ग
था॥ विव्रनीकमलाजेशी सहस्ररविसंनिभां॥ अष्टाष्टकमध्यस्था च एक
॥ विकालिं कुलमध्यस्था ज्योतिरूपानि केवला॥ निर्वाणाय ददात्री च भावातीताम त
ध्याने २॥ त्रियाञ्जलि ३॥ तर्प्यरा ३॥ मूलेन ध्याय चन्दनादि॥ मूलेन त्रियाञ्जलि
गायत्री॥ ॐ प्रेकालरात्री विष्टदेकालसंकर्षणिधीमहीतन्न का

पंचवैलीय जा ॥ रवेँ महाचराड योगेश्वरी स्तुति कालिका म्वा. या. ॥ वलि ॥
 स्तुति कालिका म्वा. या. ॥ वलि ॥ स्तुवेँ महाचराड योगेश्वरी संहार कालिका
 क्रीं महाचराड योगेश्वरी अनाक्ष कालिका म्वा. या. ॥ वलि ॥ रवेँ महाभासाका ॥
 त्रिशा अलि ॥ षडंग ॥ वलि ॥ ॐ कूं चूं चूं फें नमः स्वाहा सर्व महायोगिनी गु
 सिद्धि प्रदं फें ३ यहि २ सर्वलोक निवासिनी फें ३ सर्वलोकान हृदि निहित
 गृहान प्रसीद मे ॐ फू फू फू फू चूं फू फू फू नमः फू स्वाहा फू

दिलक्ष्मीभजे ॥ इति ध्यानं ॥ ॥ त्रियाञ्जलि ३ ॥ तर्पण ३ ॥ मूलेन पायादि
अलि ३ ॥ वलि ॥ षडंग ॥ वलि ॥ तयोदश मेलाय क श्रीसिद्धिलक्ष्मीदेवीभ्यो
आवाहन ॥ योनिपुत्रा ॥ ॥ कालिपूजा ॥ घ्राणायामः ॥ स्वेकं न्यास ॥ स्व
करसौधनं ॥ ॐ ऐं कनिष्ठकाभ्यां २ ॥ सिद्धिकरालि अना ॥ श्रीं ह्रीं
अंग ॥ स्वाहा करतर ॥ ॐ ऐं हृदयाय २ ॥ सिद्धिकरालि शिर ॥ श्रीं ह्रीं
नमो नैव ॥ स्वाहा अस्त्रा ॥ ॥ पावपूजा ॥ गृह्यकालीपात्रासनाय २ ॥ ग्लः

त्नाय २ ॥ क्रीं श्रीं हं २ आनन्द भैरवया ॥ सँ २ आनन्द भैरवी कल्यान्वा
 ॥ आवाहनः योनिमुद्रां ॥ ॥ देव्यासनयूजा ॥ पद्मासनाय २ ॥ ॐ क्रीं
 ॥ ॐ क्रीं वेदमुद्रासनाय २ ॥ ॐ क्रीं दिव्यतिमरास ॥ ॐ क्रीं ब्रह्मप्रेत
 प्रेतास ॥ ॐ क्रीं महाभैरवसे ॥ ॐ क्रीं महाशिवास ॥ ॐ क्रीं कद्रव
 लास्वस्वकृपिणी ॥ नीलाम्बानिराकारनिर्घोरीशीयरेश्वरा ॥ सर्वाम्बाये
 मराडले ॥ ॥ ध्यानं ॥ अतिगुह्यामहाकालिदशवक्त्राविलोचनी ॥ कृष्ण

ॐ शंखशस्त्रपाशद्वयः वज्रः पश्चिमदले ५

हृदयाये २ ॥ तारिणिः शिः ॥ वज्रोदकेः शिखाः ॥ उग्रजतेः कः ॥ म
पि गोशैवकजते अस्त्रा ॥ ॥ अग्निशासुरबासुवेषु नैत्रमधो अ
श्वेदेव्यावायव्यादि शी शानानां गुरुपक्ति पूजयेत् ॥ ॥ ततोऽ
वैवैरेचनायः वज्रपुष्पप्रतिष्ठा कुंफ दस्वाहा ॥ पूर्वदले ॥ ॐ
दक्षिणदिशि दले ॥ ॐ यं यन्तनामायेः वज्रः ॥ उत्तरदले ॥ ॐ लौ लो
ले ॥ ॐ मां मा मकेः वज्रः नैऋत्यदले ॥ ॐ पां पा राडलेः वज्रः वायव्य

वज्र ईशानदले ॥ ॥ चतुर्द्वार ॥ ॐ पद्मान्नकाय वज्र० पूर्व ॥
 दक्षिण ॥ ॐ विद्मन्नकाय वज्र० पश्चिम ॥ ॐ नरकान्नकाये-
 नत्रिभुजलि ॥ तर्पण ॥ ॥ सिद्धिलक्ष्मीपूजा ॥ न्यास ॥ खूं अ
 खडंग ॥ आसन ॥ पद्मासनाय पा ॥ प्रेतासनाय पा ॥ हूं रुद्रासना
 णकुशयासश्चरवलकुलीप्राणापात्रं शिरः कुम्भाशिज्वरितो दभ
 शिवां ॥ रुद्रस्कंधगतां शरद्वर्णिनिभां पद्माननां सुन्दरी पद्मत्रिदशविर

हाडामराधिपतये स्वाहा ॥ १ ॥ ऐं ५ जया श्वविजया चैव जयनिचा पराजिता ॥ नन्दा भद्रा
जया भीमा कला वेद्या सा कंतथा ॥ दिव्यो योनि महा योनि सिद्धि योनि गरो ध्वरी ॥ साकिनी काल
रात्री च उर्ध्व केशी निशाचरी ॥ गम्भीर घोषणी स्थूला पवनाङ्गी उलोमिका ॥ भीषणा च महा वरा
ज्वाला मुखी तथैव च ॥ पिशाच हस्तिनी चैव यक्षिणी धूजती तथा ॥ विषमक्षी सर्व सिद्धि रुद्धि ई
क्षा तथैव च ॥ क्रूरा कारी भास्वरी दीर्घा धूम्राक्षी कलहप्रिया ॥ मातङ्गी काक हस्ति च तथा त्रिपु
र चोतकी ॥ राक्षसी घोरतादाचरत्वाङ्गी विश्वरूपिनी ॥ भयं करी रौद्र विभत्सी भ्रूकाङ्गी नर

नोजनी ॥ वीरभद्रमहाकालि ॥ विकृताननाब्रह्मीचवेष्टवीरोद्गीचर्विकईश्वरीतथा ॥ वाराहीना
रसिंहीच ॥ शिवहूतिचतुःषष्टिका ॥ इदं देव्यामहायोगिनीवलिंगं कृतं मे सदा ॥ श्रीं चैष ष्ठी योगि
न्यो वलिं गृह्ण १ सर्वशान्तिं कुरु १ सर्वविघ्नविनाशाय सर्वशान्तिं कुरु १ हूं फट् स्वाहा ॥ २ ॥
ऐं ५ श्रीं सर्वपीठोपपीठानि दारोप्य द्वारमेव च ॥ अत्रोपक्षत्रसंदोहा सर्वदिग्भागसंस्थि
ताः योगिनीयोगवीरेदाः सर्वतत्र समागता ॥ इदं पर्वमहाचक्रं श्रीनाथो वरदो मम ॥ ये
भक्त्या सासने देवी गुरुपादाब्जनेरता ॥ सर्वसिद्धिप्रसादो मे देवी तेषां भवेत्सदा ॥ वीरानो ॥ २४ ॥

योगिनीनांश्च यद्विषन्ति महोत्तरे ॥ तदत्रात्रवल्लिंदेवीसमयाचारमेरके ॥ श्रुति स्मृति
मनःपुष्टिमांसमेदोस्थिजीवितं ॥ निकृत्तं यत्तुः स्थानां योगिनीगणसंक्रला ॥ कुं
कानिकृत्स्वप्नानि दुर्निमित्तानि दुर्भाषितां ॥ निकृत्तं यत्तुः स्थानां योगिनीगणसंक्रलाः ॥
ॐ कारादिषु ये पीठास्त्रयसागप्रकीर्तिता ॥ ओषधीधातुसंदोहादिशासु विदिशासवः ॥
महीयातालव्रज्जगतेः सर्वस्थानान्तरेषु च ॥ योगिनो योगयुक्तात्मासमयेति न साधका ॥ वी
रकर्मसुचेन्द्रोः सत्येति षट्पदेवता ॥ सिद्धाश्च पुत्रकाचार्याः साधकाः क्षितिशाश्विन ॥

नगरे वाथ ग्रामे वा अतव्याम्बा शरिद्धरे वापि कुपे कवक्ष वा शन शाने मातृ मराडले ॥ माता ह्यधरा न्येपि
वरजा विविधानि च ॥ ते च सर्वे यि संतुष्टा वलिगृह्णंतु सर्वतः ॥ शरणागतोऽप्यहं तेषां सर्वमेतत्फलप्रदं
॥ धारधरत्नया कर्मयत्करिष्यामि यत्कृतं ॥ वलिपुष्पप्रदानेन संतुष्टा मम चिन्तका ॥ स
र्वकर्मानि सिद्धिन्तु सर्वे दोषा प्रक्षान्तु मे ॥ शिवशक्ति प्रसौदेन श्रीकृष्णकान्तनमाम्यहं ॥ ३ ॥
ऐं ५ ब्रह्मान् ब्रह्मा राउ खराडं यिव रुधिरसदा सिद्ध १ प्रवज्वनानुष्मो कृष्णरक्तपशूपि
शितपतत्सर्वतो यूरजागे ॥ वज्रेनिद्रात्मकारा कुरु कनगिरिताता श्रवोनिष्ठशंभो देवी ॥ २५ ॥

चक्रं चिकिर्षु स्वयमिति वटवो वन्दिता मयुनातु ॥ ४ ॥ उर्द्ध्ववत्तारादः साध्यसिद्धाश्च सर्वे
अलितपिशितवलिपूजागृह्णन् मम शान्तिकामेज्जुरुङ्गफट् ॥ ५ ॥ ऐं क्रीं कूं यक्षरा
क्षसभूताश्च कुलजाश्च विशेषतः ॥ नानारूपधराश्चान्या योगिवत्तवन्तला ॥ नानादेशनिवा
सिन्योऽस्मि चक्रे समागता ॥ समयास्थेन ये चान्यातथा च वलिकांक्षिणा ॥ तृप्यन्ते आसवे
र्दिव्ये गन्धपुष्पादिफलपुष्पैः ॥ तस्माददन्तु मे कामान् वांछितार्थददस्व मे ॥ कूं फट् स्वाहा
॥ ६ ॥ ॐ क्रीं श्रीं ह्रीं शिवाभगवति श्रैव ॥ ७ ॥ ऐं ५ कवरीकः कामेति ॥ ८ ॥ ऐं ५ या

भूदिव्यान्तरिक्षेदशदिशि भुवने सप्तपातालमूले क्षेत्रे यी ठो। य यी ठे निषमचतुष्य ठे मेरुकेवा
इमशाने सिधोतीरै कवृक्षे उदधिभूभतरे धूमकाणवतारे कोलर्या धूरा गिरिस्थं मधचपु
रवरै ओविशाने प्रधाने ॥ जालाख्ययोगमुख्ये कुलपतिनगरे कामरूपे सरूपे ॥ उर्जशनां
नदहासे पटुयतहरवीला उदेशे प्रदेशे श्रीशैले पालिजाते पशुपतिनिलये रुमविं
ध्याचलेन ॥ श्रीमोका वाददेश मरुतपथगिरी द्यकिनी शाकिनीनां ॥ कास्मीरे चान्द्रदेशे
प्रविदमलये केवलवाद्यकुरुते ॥ स्त्रीराज्ये रुक्मिणी उरशिविरजके सिद्धि क्षेत्रे उदारे ॥ २८ ॥

ॐ
एरुआं पारिजाते हिमगिरिशिखरे कांचिदेशे प्रियागे ॥ सौराष्ट्रमध्यदेशे भृगुपुरनगरे का
मुवाकर्णाटे कांकनेवामघवपुरवरे कर्णाकुञ्जे कलिंगे ॥ वक्षामेहंसवाहे हिमरजपतले
जंगराव्योङ्गुहे सातचके मुनिगरानिलये डोहले चण्डरशे ॥ राष्ट्रोशोरे पुष्पराखगिरिग
हिरगुहे चाक्रहे सिंहनादे ॥ वंगारखे भीमनादे शिवपुरिनगरे नेदमूले जयारखे श्रीविश्व
खेकछत्रे प्रवरगिरितले पक्षकुम्भे चलंका ॥ वाराणस्यां विशाले त्रिपठे मुनियठे शुद्धक
लेचमार्गे ॥ म्लेच्छान्ते म्लेच्छमाले मलयगिरिगुहा ब्रह्मदेशे पुरे वा ॥ नडांगे मूलस्थाने प्रक

तिप्रलये. सिंहकर्णशशांके॥ त्रिओत्रेव्योममध्ये सुरवरसयने गहगरखे स्थरेषु. योगिभा
मराडजाश्च विविधवृक्षनुतां सातरस्तां च सर्वां नृणाः सिद्धाः सुसिद्धा विविधवृक्षनुता दिव्यसि
द्धिददन्तु॥ २॥ खड्गम्वामंत्रसिद्धिप्रवरविसदं खेगति लोचनं म्वा. शत्रुस्तंभं विप्रुलव
लिपलितजयंस्तंभनं सर्वविघ्ना॥ दिर्घायुष्यं कवित्वं निधिरसगुटिकां पादुकां कामसिद्धिं
सर्वाण्येताददन्तु अलिपिसितरता भैरवेनां न्ययुक्ता॥ उष्ट्रश्च नारिमारिग्रहगणारगले विप्रुपा
तेरनेका॥ राजघारे जलौघे विघटयतु भयं ध्यायतश्च राड नृणां॥ वौं वौं क्रें कारंती ह ह ह ह हसि ॥२७॥

तैश्चैव नीयिवन्ती. मंत्रमाता. किलि २ त किलिलोल भोषांगिरन्ती ॥ सा भ्रूषा कामरूपाय
रत्नवटस्य २ कंकारनादा उत्तिष्ठानीलकंठ्या अमलसुहृदया विन्दुमुद्रिप्रशस्ता ॥ कें
३ कारयन्ती. रुरुधिवशाश्च मानासरोया ॥ जिह्वाग्रं लालयन्ती. लङ्गताश्च वयन्ती विव
न्ती ॥ कृष्णा कामाख्या इती अमलगुणानुता. विन्दुनादान्तलीना. शक्तेरनेसिद्धिदामायरमय
रगतावधितारंगमङ्गा ॥ प्रागर्भा लोकपाला गसपमनयुतायार्थिवेनोत्पुक्ता ॥ षष्ठस्था विन्दु
युक्ता कुलकमरतात्वारिणी कुण्डलाख्या. विख्याता रुद्रशक्ति. शचदिसचदिशतु शिवनीयनी

मदकाली काँकीं हूँ कामरूपाय-कुल २ गता द्वे धिरां भक्षयन्ती ॥ सा ते श्रुज्जि कारवा वि
तरतु परमं वासदिव्यं धर्मो धी-चातुराडा कौशमार्गे कुलकमलमये कोलिनी कोङ्कनारवा
आख्याता वाममार्गे प्रकटितनिलया-मालिनी विन्दुदेहा ॥ ॐ कारे मराडलेवा अकुलकु
लमया-योगि चक्रे प्रविष्टा ॥ श्रीनाथोत्संगगामा प्रवरमुनिगणो चर्चिता भीममूर्ति ॥
सा देवी लोकमाता शिवसकल मुखे पातु श्रीनाथचक्रे ॥ श्रीकराष्टात्पर्वमाना चतुरस्र
गसहिता-मध्यलिङ्गे विंकारवा ॥ पीठस्था दूरयन्ती चक्रचकितकला कोलमार्गे दिता ॥ २८ ॥

भा ॥ नाम्ना श्री कृष्णिकाख्या त्रिपठ गतियुता त्र्येक्ष रात्रि प्रकाश . तान्देवी नो मि भक्ता प्रक
टित निलये पञ्चकान्त विभीना ॥ कालिकं कालरूपा कलिततररवा भीषनी भक्षयती
सामे श्री कृष्णिकाया प्रकटयतु महा शानदिव्यो घनोर्ध्व ॥ क्रीं ग्लूं क्रीं स्लूं क्रीं स्लूं क्रीं भूं
क्रीं लूं ह्रीं : स्त्रूं श्री क्रीं रे अर्द्धि देहि सिद्धि देहि शानं देहि आयुर्देहि धनं देहि धान्यं दे
हिलक्ष्मी देहि शीमां वलिंगु क्र २ नम मृता च दो स्वाहा ॥ १० ॥ समस्तमन्त्र योऽथ ॥ ५ ॥
नुक्तं ॥ ॥ क्षमस्व वरदो मम स्वाहा ॥ ॥ यजमान त्रियां जलि ॥ ॥ निर्वारा ॥ ॥ त्वाक

महावलि ॥ क्षत्र ॥ वटुक ॥ गणा ॥ दूं महाकर्मा ॥ चामुचा ॥ आकाश ॥ सर्वेभ्यो भूतेभ्यो पिशा
चईष्टदेव वलिंगु ॥ १ ॥ स्वाहा ॥ ॥ समस्तमंत्र ॥ ॥ पश्चिम ज्येष्ठा जेष्ट महा माया श्री कृत्तिका
देवी श्री सिद्धिलक्ष्मी मंदकजाता गुह्यकालि त्रिपुर सुन्दरी देवी मूर्तिभ्यो यथा उदेश वलिंगु ॥
१ ॥ दामस्तवरदो ममः स्वाहा ॥ आवाहन ॥ योनिमुद्रा ॥ धूपदीप मोहनी फल ॥ नैवद्य ॥ जाप
॥ प्रो स्वाहा १० ॥ श्रीं क्रीं २ ॥ ग्लूं २ ॥ स्त्रीं २ ॥ न्द्रीं २ ॥ जां क्रीं कूं २ ॥ क्रीं स्त्रीं २ ॥ ॐ क्रीं कूं
क्रीं कूं स्त्रीं क्रीं नमः १० ॥ ॐ क्रीं स्त्रीं क्रीं क्रीं कराली क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं नमः स्वाहा १० ॥

॥ २८ ॥

नारायण ॥ निर्वर्णाय ॥

कुंजी स्वाहा १० ॥ ह्रूं ह्रूं ह्रूं २ कूं २ जपसमर्पण ॥ गुह्यातिगुह्य ॥ जपया स्वां विधे ॥ ॥
मराडल ॥ आ नै रति कर ३ मतासलं वनहाये ॥ गायत्रीन ॥ अर्घ्यपावनहाय ॥ ॥
ॐ समस्तचक्रचक्रेसि युते देवी नवात्मके ॥ आरात्रिकमिदं दीपं गृहानममसिधये
॥ स्तोत्र ॥ ऐं ५ अखण्डमण्डला ॥ ॥ श्रीमहाभैरवाय ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ श्रीसवर्ता ॥ ॥
शक्ति सुव ॥ संतान सुव ॥ माहमाया ॥ पिंगाक्षि ॥ रक्ताम्बर ॥ हनार्वा ॥ ईश्याशानी ॥ उ
कारो ॥ ब्रह्मराणी ॥ मध्येतिश्रा ॥ श्यामारक्ता ॥ मार्कण्डेयो ॥ प्रकटविकट ॥ उत्फुला ॥ याशा

नतकागति॥ ऐं ५ इत्ये॥ माया कुराडलनी॥ बालभावे॥ पूर्णेश्वरी निशानाथदर्शेश्वरी कुजे
श्वरी॥ त्रिपुराहातकेशीच॥ षडाम्नायेनमोस्तुते॥ अवगम्भा॥ नमस्कार॥ तर्पण॥ ऐकाने॥
मराडलजेय॥ अन्वे पूर्व॥ स्वाङ्कुये॥ सूपि पूजा॥ फद्दू प्येलं वनसिले॥ चन्दन॥ सिन्ध॥ पुष्पः
॥ न्यास॥ ॐ अस्वाय फद्दू ॥ ४ ॥ इति न्यास॥ ॥ पूजा॥ ॐ क्रीं कर्त्रिका क्रीं फद्दू ३॥ षडंग॥ स्तोत्र
॥ खजाय खलना शाये॥ शक्ति कार्ग्य यतत्पर॥ पशुद्धे दत्त यासि घुं खजनासातेनमः॥ ॐ कालि
श्वरी लोहदण्डाय नमः॥ अवगम्भ॥ ॥ डोगुलिवायके॥ डोगुस नृवन्धुनयाय॥ ॐ ॥ ३० ॥

अस्त्राय फ ३ ॥ विलि ॥ ॐ भूताय विविधा काला भूविदिव्या नरि क्षगा ॥ पाताल तल वासिन्यः सं
स्थितास्तु शिवाश्रया ॥ इदं वलि गृह २ स्वाहा ॥ मता विद्या वलि वाय ॥ दो गूलं घन हाये ॥ चेतसिं भ
ल न ते च के ॥ खान छु च के ॥ स्या गुल ते च के ॥ न्यास ॥ क्रंः अस्त्राय फ ४ ॥ क्रौं कनिष्ठा काभ्यां २ ॥ क्रौं
अनामिकाभ्यां २ ॥ इत्यादित्यास ॥ ॥ पूज्य ॥ ॐ शांतातीत कलाये २ शिरे ॥ ॐ शान्ति कलाये ४
॥ ॐ विष्णु कलाये २ ॥ ॐ गौरी ॥ ॥ ॐ प्रतिष्ठा कलाये २ ॥ मा भि ५ ॐ क्रौं नमः
क्रौं ॐ नमः ॥ ॐ क्रौं शिरे ॥ ॐ क्रौं २ दृष्टे ॥ ॥ नो म विलोम ॥ क्रौं प्रोक्षणां ॥ ॐ क्रौं क्रौं

ॐ परमपातकनाशाय २ यशुमोक्षं कुरु २ स्वाहा ॥ छागस्य पुच्छे. पृष्ठे. शिरे. त्रिधासं पुज ॥
ॐ फें अघपात्रेन विन्दुचयं ३ ॥ यशुगायत्री ॥ ॐ यशुपाशाविष्णुहे विश्वकर्माय विमही
तन्न जीव प्रचोदयात् ॥ ॥ समय ॥ ॥ अघ. वाक्य ॥ ॐ फें कूं ईदं यशुगृह २ गृहका
लि फें स्वाहा ॥ ॐ यशुगृहासि देवेशि प्रक्षया उपवासेया ॥ अस्यापि स्वर्गसं पति गृहकालि
प्रयच्छ मे ॥ मुहाके ॥ तर्पण ॥ ॥ उग्रचराया ॥ ताराया ॥ सिद्धिलक्ष्मि या ॥ कालिया ॥ मातृ
काविजयया ॥ ॐ अघोरदष्टे करालास्य मम मांससदापि दे ॥ वलिगृह महादेवि पशुर्त्तं ॥ ३९ ॥

समस्तकं ॥ शिष्ये ज्ञानाद्य मता विद्ये ॥ ॥ इति संक्षेपपद्य तिसमाप्तः ॥ ॥ रक्तवलि ॥ ॥
ॐ फैं रक्तवलि फैं २ रक्तवलि फैं ३ ॥ ॐ हूं चूं फ्रें ३ ॥ नमः स्वाहाः सर्वमहायोगिनीगु
ह्यह दसर्वसिद्धिप्रदे फ्रें ३ ऐं ह्ये हि सर्वलोकनिवासिनी हूं ३ सर्वलोकानहृदिनी हितानः कुरु
२ वलिगृह्ण २ सा प्रसिद्धमे ॐ कुरु २ चूं फ्रें ३ स्वाहा फ्रें ॥ ॐ क्रीं श्रीं श्रीं सदेकजठरीनां
रक्तवलि गृह्ण २ मम सर्वापशांति कुरु २ परविद्यां तुरु २ तर २ श्रीमदेकजठरे सपरि
वारो य रक्तवलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ ॐ क्रीं हूं ह्रीं फ्रें ॐ फ्रें रक्तवलि ० ॥ इति रक्तवलि

अथ कलंक पूजा ॥ ॥ गुरुनमस्कार ॥ पद्मासनायः पा ॥ कृन्मा ० ॥ न्यास ॥ ॐ हिलिअ
त्रायफ ६ ४ ॥ ह्रं मातंगेश्वरायः कनिष्ठकाभ्यां २ ॥ क्षं मात ० अनाति ० ॥ इति करः स
डंग ॥ ॥ वक्रं न्यास ॥ जलपात्रपूजा ॥ अर्धपात्रः भूतश्रद्धि ॥ आत्मपूजा ॥ संवर्त्ता आ
वाहन ॥ त्रिदेव ॥ ॐ आधारशक्ति ८ ॥ शवासनायः ॥ ध्यानं ॥ ॐ काकानना ० ॥ ॐ अघो
रायः पा ॥ भीष्मायः पा ॥ परस्वाम्यैः पा ॥ त्रिकोणा ॥ ऐं ५ राजमातंगेश्वरीदेवीः पा ॥ ५
नरमातं ० ॥ ऐं वनमातं ० ॥ ५ घोरमातं ० ॥ पचन्दमातं ० ॥ ५ वीरमातं ० ॥ ५ जयमातं ० ॥ ५ उद्दिष्ट ॥ ३२ ॥

मातं० ॥ ईति अष्टपत्रे ॥ भूतेभ्यो २ ॥ राक्षसेभ्यो २ ॥ ॥ त्रितृतिपूजा ॥ शिवाय २ ॥ स्थानाय २ ॥
गृध्राय २ ॥ उल्काय २ ॥ ॥ द्वारपूजा ॥ ग्लूं स्तूं प्लूं न्लूं न्लूं पराशक्तये २ ॥ ऐं क्रीं सत्याग्रमथ
नपराशक्तिस्तूं वलिगृह २ स्वाहा ॥ ॥ त्रियात्रलि ३ ॥ ऐं ५ हं २ कूं २ सिद्धिमातंगेश्वरी तं
२ ॐ कूं सिद्धिमातं० ॥ षडंग ॥ पूतछाये ॥ धवनछाय ॥ वलि ॥ ५ हिलि २ उद्धिष्टमुखेभ्यो
वलिगृह २ स्वाहा ॥ महावलिधूतके ॥ आवाहन ॥ मुद्रां ॥ धूपदीप जाप ॥ कूं स्वाहा ५४
स्तोत्र ॥ ॐ भूमाभंदीप्तनेत्रं० ॥ अत्रगन्ध ॥ नमस्कार ॥ तर्पण ॥ ऐं काने ॥ अन्वेपूर्व ॥

गवये छक्र नोचाले ॥ कलंखछोये ॥ वप्रये ॥ अभिषेक ॥ ॐ उकारं ॥ ताम्बूलादि ॥ ॥
ईतिकलंषपूजा ॥ भ्रमसु ॥ ॥ ॥ ततोमालासंस्कार ॥ अस्वस्थपत्रगृहित्वा पद्माका
रं कृत्वा ॥ तन्मध्ये मालास्थापनं ॥ न्याशादि ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ माला चतुसंस्कार ॥ मालाजपलये ॥
अभिषेक ॥ चतुश्चम चन्दन ॥ पुष्पमालाजपलये मंत्र ॥ ॐ अआ १६ करव ३५ ॥ धार ३ ॥ लोमवि
लोम ॥ ध्वमंत्रन त्रिधा जलि ३ ॥ षडंग ॥ जप ॥ मांताले २ ॥ माहमाये ॥ सर्वसिद्धिपथ ६ स्वाहा १० ॥ ॥
॥ ॥ अर्घपात्रयानंयः चेतनक्रने ॥ मूलमंत्रन जपलये धार ५४ ॥ आवाहन योनिमुद्रा ॥ ॥ ३३ ॥

अस्त्रमंत्रविशर्जन॥ नमस्कारयाज्ञवल्क्ययाये॥ ॥ इतिमालाशोधनः॥ ॥ शिरयार
क्तितिय॥ ॐ पद्योरदष्टेकरालस्यमद्यमांससदाप्रिये॥ वलिगृह्णमहादेवायश्रक्तसम
साके॥ ॥ रक्तवलिविये॥ ॐ ऐं रक्तवलि ऐं रक्तवलि ऐं ३॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीमदेकजटे ईमां
रक्तवलिं गृह्णं नमसर्वायछान्तिं कुरुं परिविद्यां नृं श्रीमदेकजटे सोपरिवाग्यरक्तवलिं
गृह्णं स्वाहा॥ ॐ ह्रीं हूं ह्रीं ऐं रक्तवलिं गृह्णं हूं हूं स्वाहा॥ ॥ इतिरक्तवलि॥ ॥ अमर
॥ इतिसम्बत् २२९ मितिमाधवश्रक्तधूर्यमागुरुवारेसम्पूर्णा॥ ॥ अममस्तुसर्वदा॥ ॥

२२

3565

ASHA ARCHIVES

॥३०॥

२१२ सिद्धि लक्ष्मी पूजा

३१
८